भाग घ ः समाहार

द्वादश अध्याय

उपसंहार

12.1 अध्ययन का सार

12.2 उपलब्धियां एवं सीमाएं

12.3 शोध-संकेत

12.1 अध्ययन का सार

विभिन्न ज्ञान-विज्ञान में शोध-विवरण अथवा शोध का विवरणात्मक सर्वेक्षण लिखने का चलन कई कारणों से हुआ है। इस संदर्भ में ज्ञात प्रथम प्रयास डॉ. उदयभानु सिंह कृत-"हिन्दी के स्वीकृत शोध-प्रबंध" है, जो **1963** में प्रकाशित हुआ है। इसमें शोध-विषय, शोधार्थी का नाम, निर्देशक का नाम, विश्वविद्यालय तथा वर्ष का ब्यौरा के साथ, वर्णनात्मक सर्वेक्षण भी किया गया है। इस दिशा में कृष्णाचार्य का "हिन्दी के स्वीकृत प्रबंध" **(1964)** भी एक सराहनीय कदम है। परन्तु डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल और डॉ. मीना अग्रवाल का प्रयास इस दिशा में एक मील का पत्थर है। इनका ग्रंथ "शोध-संदर्भ भाग- **1**" **(1980)** में प्रकाशित हुआ है। इसके अब तक **6** भाग प्रकाशित हो चुके हैं। डॉ. उदयभानु सिंह कृत-"हिन्दी के स्वीकृत शोध-प्रबंध" को छोड़कर ये ग्रंथ केवल विषय-सूची मात्र हैं। इनमें शोध-प्रबंध का सर्वेक्षण नहीं किया गया है। इस दिशा में कुछ विश्वविद्यालयों व विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने भी प्रयास किए हैं। महात्मा गांधी विश्वविद्यालय, वर्धा ने अपनी वेबसाईट तथा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने अपनी वेबसाईट 'शोध गंगा' में शोध-विषयों के बारे में जानकारी दी है। वेबसाईट 'शोध संचयन' पर भी शोध-विषयों के बारे में बताया गया है, परन्तु यह जानकारी सूचना मात्र है। इसमें शोध-विषय, शोधार्थी का नाम, निर्देशक का नाम, विश्वविद्यालय तथा वर्ष का ब्यौरा दिया गया है। सूची मात्र होने के कारण शोधार्थियों को विस्तृत सूचना प्राप्ति हेतु पुस्तकालय में जाना पड़ता है।

शोध-प्रबंधों का वर्णनात्मक सर्वेक्षण एवं शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन दोनों करने का सर्वप्रथम प्रयास डॉ. ब्रह्मवेद शर्मा ने पीएच. डी. शोध-विषय "पश्चिमोत्तरी भारत के विश्वविद्यालयों में सम्पन्न हिन्दी शोध-कार्य ः वर्णनात्मक सर्वेक्षण एवं शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन (प्रारम्भ से **1990** तक)" में किया है। यह शोध-प्रबंध पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ में **1993** में सम्पन्न हुआ है। इसी परम्परा को आगे बढ़ाते हुए प्रस्तुत शोध-विषय "वर्णनात्मक सर्वेक्षण एवं शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन के संदर्भ में पश्चिमोत्तरी भारत में सम्पन्न हिन्दी शोध-कार्य (सन् **1991** से **2010** तक)" में विवेच्य विश्वविद्यालयों से प्राप्त शोध-प्रबंधों का वर्णनात्मक सर्वेक्षण एवं शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन

किया गया है। प्रस्तुत शोध-प्रबंध शोध-संदर्भों की विवरण संबंधी कमी को दूर करता है, ताकि शोधार्थियों को इस पक्ष से क्रमबद्ध, वैज्ञानिक व व्यवस्थित जानकारी प्राप्त हो सके।

शोध-सार

प्रस्तुत शोध-प्रबंध पांच खंडों के अंतर्गत **12** अध्यायों में विभक्त है। प्रथम खंड में **1** अध्याय है। प्रथम अध्याय विषय-उपस्थापन में विषय-कथन, संबंध साहित्य का सर्वेक्षण, परिसीमन, विषय के महत्त्व आदि का निरूपण किया गया है। विषय-कथन के अंतर्गत विवेच्य विषय के बारे में सामान्य जानकारी दी गई है। शोध का अर्थ, सर्वेक्षण, वर्णनात्मक सर्वेक्षण, शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन और विवेच्य विश्वविद्यालयों के बारे में बताया गया है। ये विश्वविद्यालय हैं-

1. कश्मीर विश्वविद्यालय, श्रीनगर
2. कु क्षेत्र विश्वविद्यालय, कु क्षेत्र
3. गु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर
4. जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू
5. पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़
6. पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला
7. महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक
8. हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला

संबद्ध साहित्य के सर्वेक्षण के अंतर्गत विवेच्य विषय संबंधी सामग्री का परिचय दिया गया है। इसमें हिन्दी और अंग्रेजी की पुस्तकों के अलावा इंटरनेट साइट्स भी हैं। विषय परिसीमन के अंतर्गत विषय की सीमा निर्धारित की गई है। प्रस्तुत शोध-प्रबंध की समय-सीमा (विवेच्य विश्वविद्यालयों में सम्पन्न पीएच. डी. शोध-कार्य) सन् **1991** से **2010** तक की है। हरेक रचना का कोई ना कोई उद्देश्य अवश्य होता है। विवेच्य शोध-प्रबंध का लक्ष्य शोध विवरण संबंधी संदर्भ-ग्रंथों के अकाल को दूर करना है; ताकि यह भावी शोधार्थियों के लिए दशा और दिशा तय कर सके।

द्वितीय खंड में **1** अध्याय है। द्वितीय अध्याय में वर्णनात्मक सर्वेक्षण एवं शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन का सैद्धान्तिक विवेचन किया गया है। सर्वेक्षण के अर्थ एवं परिभाषा, अवधारणा एवं उद्देश्य, प्रक्रिया और प्रकार का सैद्धान्तिक पक्ष प्रस्तुत किया गया है। वर्णनात्मक सर्वेक्षण के अर्थ एवं परिभाषा, उद्देश्य, अवधारणा, सिद्धान्त, प्रक्रिया, उपयोगिता एवं महत्त्व तथा सूचीकरण और वर्गीकरण को भी विश्लेषित किया गया है। शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन की अवधारणा, प्रक्रिया, अर्थ एवं परिभाषा, शोध-प्रबंध के मानक नियमों तथा शोध-संदर्भ के महत्त्व का अध्ययन भी यहां है।

तृतीय खंड में **9** अध्याय हैं। तृतीय अध्याय में पश्चिमोत्तरी भारत के विश्वविद्यालयों में सम्पन्न हिन्दी शोध-प्रबंधों (सन् **1991** से **2010** तक) का सूचीकरण दिया गया है। इसे आगे दो भागों में विभक्त किया गया है। आकारादिक्रम के अनुसार और वर्षानुसार। विवेच्य विश्वविद्यालयों में कुल **1221** शोध-विषयों पर शोध के कार्य की जानकारी उपलब्ध हुई है। सबसे ज्यादा काम कु क्षेत्र विश्वविद्यालय, कु क्षेत्र में हुआ है। यहां पर कुल **298** शोध-विषयों पर शोध का कार्य हुआ है। पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ में **239** शोध-विषयों पर शोध सम्पन्न हुआ है। महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक में **220** शोध-विषयों को शोध का आधार बनाया गया है। हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला में **175** शोध-विषयों पर शोध-कार्य हुआ है। गु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर में **165** शोध-विषयों पर शोध सम्पन्न हुआ है। पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला में **90** शोध-विषयों को शोध का आधार बनाया गया है। जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू में **28** शोध-विषयों पर शोध का कार्य हुआ है तथा कश्मीर विश्वविद्यालय, श्रीनगर में **6** शोध-विषयों पर शोध सम्पन्न हुआ है।

चतुर्थ अध्याय में पीएच.डी. हिन्दी शोध-प्रबंधों का प्रमुख वर्ग एवं वर्गगत सूचीकरण किया गया है। इसे आगे छः भागों में विभक्त किया गया है- प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य, आधुनिक काव्य, कथा-साहित्य, नाटक एवं एकांकी साहित्य, इतर हिन्दी गद्य साहित्य (कथा-साहित्य एवं नाटक साहित्य से इतर) एवं विविध विषय (भाषा-विज्ञान, समीक्षा, लोक-साहित्य, तुलनात्मक अध्ययन इत्यादि)।

सबसे ज्यादा शोध-प्रबंध कथा-साहित्य से संबंधित मिले हैं और सबसे कम शोध-प्रबंध इतर हिन्दी गद्य साहित्य (कथा-साहित्य एवं नाटक साहित्य से इतर) पर हैं। कथा-साहित्य से संबंधित कुल **405** शोध-प्रबंध प्राप्त हुए हैं। इसके पश्चात् विविध साहित्य पर **381** शोध-प्रबंध मिलते हैं। आधुनिक काव्य पर **181** शोध-प्रबंध, प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य पर **113**, नाटक एवं एकांकी साहित्य पर **98** तथा इतर हिन्दी गद्य साहित्य पर **43** शोध-प्रबंध उपलब्ध हुए हैं।

पंचम अध्याय में आदिकाल एवं भक्तिकाल काव्य संबंधी शोध-कार्य का वर्णनात्मक सर्वेक्षण एवं शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन किया गया है। आदिकाल को आगे दो भागों में विभक्त किया गया है- रासो तथा वीर गाथा साहित्य तथा सिद्ध, जैन एवं अन्य अपभ्रंश साहित्य। रासो तथा वीर गाथा साहित्य संबंधी **1** शोध-विषय पर शोध-कार्य हुआ है। सिद्ध, जैन एवं अन्य अपभ्रंश साहित्य संबंधी भी **1** शोध-विषय पर शोध-कार्य सम्पन्न हुआ है। भक्तिकाल-काव्य को आगे **5** भागों- संत-काव्य, सूफ़ी-काव्य, राम-काव्य, कृष्ण-काव्य एवं भक्ति संबंधी सामान्य, सैद्धांतिक एवं तुलनात्मक शोध-कार्य में विभक्त किया गया है। संत-काव्य संबंधी कुल **29** शोध-ग्रंथ प्राप्त हुए हैं। सूफ़ी-काव्य संबंधी कुल **3** शोध-ग्रंथ, राम-काव्य संबंधी कुल **11** शोध-ग्रंथ, कृष्ण-काव्य संबंधी कुल **17** शोध-ग्रंथ तथा भक्ति संबंधी सामान्य, सैद्धांतिक एवं तुलनात्मक शोध-कार्य संबंधी कुल **57** शोध-विषयों पर शोध-कार्य सम्पन्न हुआ है।

आदिकालीन एवं भक्तिकालीन काव्य संबंधी कुल **119** शोध-विषयों पर शोध-कार्य हुआ है। पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ में **35** शोध-विषयों पर, कु क्षेत्र विश्वविद्यालय, कु क्षेत्र में **32** शोध-विषयों पर, गु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर में **24** शोध-विषयों पर, महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक में **16** शोध-विषयों पर, पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला में **6** शोध-विषयों पर तथा हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला में **6** शोध-विषयों पर शोध-कार्य प्रस्तुत हुआ है।

षष्ठ अध्याय में रीतिकालीन संबंधी शोध-कार्य का वर्णनात्मक सर्वेक्षण एवं शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन किया गया है। इसे आगे **4** भागों में विभक्त किया गया है- रीतिबद्ध काव्य,

रीतिसिद्ध काव्य, रीतिमुक्त काव्य तथा रीतिकालीन संबंधी सामान्य, सैद्धांतिक एवं तुलनात्मक शोध-कार्य। रीतिबद्ध काव्य संबंधी **2** शोध-ग्रंथ, रीतिसिद्ध काव्य संबंधी **1** शोध-ग्रंथ, रीतिमुक्त काव्य संबंधी भी **1** शोध-ग्रंथ तथा रीतिकालीन संबंधी सामान्य, सैद्धांतिक एवं तुलनात्मक शोध-कार्य संबंधी कुल **24** शोध-ग्रंथ प्राप्त हुए हैं। इस प्रकार रीतिकालीन संबंधी शोध-विषयों पर **28** शोध-प्रबंध सम्पन्न हुए हैं। पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ में **11** शोध-विषयों पर, कु क्षेत्र विश्वविद्यालय, कु क्षेत्र में **10** शोध-विषयों पर, महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक में **3** शोध-विषयों पर, गु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर में **2** शोध-विषयों पर तथा पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला में भी **2** शोध-विषयों पर शोध-कार्य हुआ है।

सप्तम अध्याय में आधुनिककालीन काव्य संबंधी शोध-कार्य का वर्णनात्मक सर्वेक्षण एवं शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन किया गया है। इसे आगे **5** भागों में विभक्त किया गया है- भारतेन्दु और द्विवेदीयुगीन काव्य संबंधी शोध-कार्य, छायावाद और प्रगतिवाद काव्य संबंधी शोध-कार्य, राष्ट्रीय, सांस्कृतिक-काव्यधारा और गीतिकाव्य संबंधी शोध-कार्य, प्रयोगवाद, नई कविता एवं स्वातंत्र्योत्तर काव्य संबंधी शोध-कार्य तथा आधुनिककालीन संबंधी सामान्य, सैद्धांतिक एवं तुलनात्मक शोध-कार्य।

भारतेन्दु और द्विवेदीयुगीन काव्य संबंधी **7** शोध-ग्रंथ, छायावाद और प्रगतिवाद काव्य संबंधी **17** शोध-ग्रंथ, राष्ट्रीय, सांस्कृतिक-काव्यधारा और गीतिकाव्य संबंधी **21** शोध-ग्रंथ, प्रयोगवाद, नई कविता एवं स्वातंत्र्योत्तर काव्य संबंधी **64** शोध-ग्रंथ तथा आधुनिककालीन संबंधी सामान्य, सैद्धांतिक एवं तुलनात्मक शोध-कार्य संबंधी **89** शोध-ग्रंथ प्राप्त हुए हैं।

इस प्रकार आधुनिक-काव्य संबंधी कुल **198** शोध-प्रबंध सम्पन्न हुए हैं। महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक में **50** शोध-विषयों पर, कु क्षेत्र विश्वविद्यालय, कु क्षेत्र में **46** शोध-विषयों पर, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला में **36** शोध-विषयों पर, पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ में **27** शोध-विषयों पर, गु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर में **25** शोध-विषयों पर,

पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला में **12** शोध-विषयों पर तथा जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू **2** में शोध-विषय पर शोध-कार्य हुआ है।

अष्टम अध्याय में कथा-साहित्य संबंधी शोध-कार्य का वर्णनात्मक सर्वेक्षण एवं शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन किया गया है। इसे आगे **3** भागों में विभक्त किया गया है- उपन्यास संबंधी शोध-कार्य, कहानी संबंधी शोध-कार्य तथा कथा-साहित्य संबंधी सामान्य तथा सैद्धांतिक एवं तुलनात्मक शोध-कार्य।

उपन्यास संबंधी **215** शोध-प्रबंध, कहानी संबंधी **78** शोध-प्रबंध तथा कथा-साहित्य संबंधी सामान्य, सैद्धांतिक एवं तुलनात्मक शोध-कार्य संबंधी **141** शोध-प्रबंध प्राप्त हुए हैं

विवेच्य विश्वविद्यालयों में कथा-साहित्य संबंधी कुल **434** शोध-प्रबंध सम्पन्न हुए हैं। पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ में **98** शोध-विषयों पर, कु क्षेत्र विश्वविद्यालय, कु क्षेत्र में **78** शोध-विषयों पर, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला में **78** शोध-विषयों पर, महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक में **70** शोध-विषयों पर, गु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर में **50** शोध-विषयों पर, पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला में **41** शोध-विषयों पर, जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू **14** में शोध-विषयों पर तथा कश्मीर विश्वविद्यालय, श्रीनगर में **5** शोध-विषयों पर शोध-कार्य हुआ है।

नवम अध्याय में नाटक एवं एकांकी साहित्य व इतर हिन्दी गद्य साहित्य (कथा-साहित्य एवं नाटक साहित्य से इतर) संबंधी शोध-कार्य का वर्णनात्मक सर्वेक्षण एवं शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन किया गया है। इसे आगे **2** भागों में विभक्त किया गया है- नाटक एवं एकांकी साहित्य संबंधी शोध-कार्य तथा इतर हिन्दी गद्य साहित्य (कथा-साहित्य एवं नाटक साहित्य से इतर) संबंधी शोध-कार्य।

नाटक एवं एकांकी साहित्य संबंधी **102** शोध-प्रबंध (नाटक संबंधी **100** शोध-प्रबंध तथा एकांकी-साहित्य संबंधी **2** शोध-प्रबंध) तथा इतर हिन्दी गद्य साहित्य (कथा-साहित्य एवं नाटक

साहित्य से इतर) संबंधी **44** शोध-प्रबंध सम्पन्न हुए हैं। निबंध साहित्य संबंधी **18,** पत्रिकाओं संबंधी **12,** आत्मकथाओं संबंधी **7,** यात्रा साहित्य और साक्षात्कार संबंधी **2-2** तथा जीवनी, डायरी साहित्य और संस्मरण साहित्य संबंधी **1-1** शोध-प्रबंध प्राप्त हुए हैं।

विवेच्य विश्वविद्यालयों में नाटक एवं एकांकी तथा इतर हिन्दी गद्य साहित्य (कथा-साहित्य एवं नाटक साहित्य से इतर) संबंधी **146** शोध-प्रबंध उपलब्ध हुए हैं। महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक में **37** शोध-विषयों (**27** नाटक, **7** निबंध, **2** पत्रकारिता तथा **1** आत्मकथा) पर, कु क्षेत्र विश्वविद्यालय, कु क्षेत्र में **34** शोध-विषयों (**19** नाटक, **1** एकांकी, **5** निबंध, **1** यात्रा-साहित्य **3** पत्रकारिता, **2** आत्मकथा, **1** डायरी-विधा, **1** संस्मरण-विधा तथा **1** साक्षात्कार-साहित्य) पर, पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ में **27** शोध-विषयों (**17** नाटक, **1** एकांकी, **3** निबंध, **2** पत्रकारिता, **3** आत्मकथा तथा **1** साक्षात्कार-साहित्य) पर, पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला में **15** शोध-विषयों (**14** नाटक तथा **1** यात्रा-साहित्य) पर, गु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर में **14** शोध-विषयों (**10** नाटक, **1** निबंध, **2** पत्रकारिता तथा **1** जीवनी-साहित्य) पर, जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू में **10** शोध-विषयों (**9** नाटक तथा **1** निबंध) पर, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला में **8** शोध-विषयों (**3** नाटक, **1** निबंध, **3** पत्रकारिता तथा **1** आत्मकथा) पर तथा कश्मीर विश्वविद्यालय, श्रीनगर में **1** शोध-विषय (**1** नाटक) पर शोध-कार्य हुआ है।

दशम अध्याय में विविध विषयों संबंधी शोध-कार्य का वर्णनात्मक सर्वेक्षण एवं शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन किया गया है। इसे आगे **4** भागों में विभक्त किया गया है- भाषा-विज्ञान संबंधी शोध-कार्य, लोक-साहित्य संबंधी शोध-कार्य, समीक्षा संबंधी शोध-कार्य तथा प्रकीर्ण साहित्य संबंधी शोध-कार्य।

भाषा विज्ञान संबंधी **15** शोध-प्रबंध, लोक-साहित्य संबंधी **40** शोध-प्रबंध, समीक्षा संबंधी **14** शोध-प्रबंध तथा प्रकीर्ण साहित्य संबंधी **227** शोध-प्रबंध प्राप्त हुए हैं।

विवेच्य विश्वविद्यालयों में विविध विषयों संबंधी **296** शोध-प्रबंध सम्पन्न हुए हैं। कु क्षेत्र विश्वविद्यालय, कु क्षेत्र में **98** शोध-विषयों पर, गु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर में **50**

शोध-विषयों पर, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला में **47** शोध-विषयों पर, महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक में **44** शोध-विषयों पर, पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ में **41** शोध-विषयों पर, पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला में **14** शोध-विषयों पर तथा जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू **2** में शोध-विषय पर शोध-कार्य हुआ है।

एकादश अध्याय में प्रमुख वर्ग एवं वर्गगत संदर्भों में विचार एवं विश्लेषण किया गया है। इसके अंतर्गत मात्रा, परिमाण तथा संख्या, कम या अधिक कार्य का कारण विवेचन, कार्य का स्वरूप एवं स्तर तथा सामान्य निर्णय प्रस्तुत किए गए हैं।

मात्रा, परिमाण तथा संख्या के अंतर्गत विवेच्य विश्वविद्यालयों में सम्पन्न शोध-कार्य को तालिका के द्वारा प्रस्तुत किया गया है। तालिका से पता चलता है कि विवेच्य विश्वविद्यालयों में इन **20** वर्षों में कुल प्राप्त **1221** शोध-प्रबंध लिखे गए हैं। कु क्षेत्र विश्वविद्यालय, कु क्षेत्र में सबसे ज्यादा **298** शोध-विषयों पर शोध-प्रबंध लिखें गए हैं। इसके पश्चात् पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ का नाम आता है। यहां पर कुल **239** शोध-विषयों पर शोध-कार्य हुआ है। महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक में **220** शोध-विषयों पर, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला में **175** शोध-विषयों पर, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला में **165** शोध-विषयों पर, पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला में **90** शोध-विषयों पर, जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू में **28** शोध-विषयों पर तथा कश्मीर विश्वविद्यालय, श्रीनगर में **6** शोध-विषयों पर शोध-कार्य हुआ है। विवेच्य विश्वविद्यालयों में हर वर्ष औसतन **61** शोध-विषयों पर शोध-कार्य हुआ है। दूसरी तालिका से पता चलता है कि विभिन्न वर्गों में कुल कितने शोध-प्रबंध लिखें गए हैं। आदिकाल साहित्य संबंधी **2** शोध-प्रबंध, भक्तिकाल साहित्य संबंधी **117** शोध-प्रबंध, रीतिकाल संबंधी **28** शोध-प्रबंध, आधुनिक काव्य संबंधी **198** शोध-प्रबंध, कथा-साहित्य संबंधी **434** शोध-प्रबंध, नाटक एवं एकांकी साहित्य संबंधी **102** शोध-प्रबंध, इतर हिन्दी गद्य साहित्य (कथा-साहित्य एवं नाटक साहित्य से इतर) संबंधी **44** शोध-प्रबंध, समीक्षा, भाषा-विज्ञान व लोक-साहित्य संबंधी **69** शोध-प्रबंध तथा प्रकीर्ण साहित्य संबंधी **227** शोध-प्रबंध मिले हैं। इसे पता चलता है कि कथा-साहित्य पर शोध-कार्य प्रचुर मात्रा में

हुआ है तथा आदिकाल, रीतिकाल तथा इतर हिन्दी गद्य साहित्य (कथा-साहित्य एवं नाटक साहित्य से इतर) पर अल्प मात्रा में शोध-कार्य हुआ है।

किस वर्ष शोध-कार्य कम हुआ है और किस वर्ष अधिक हुआ है, इसका वर्णन इस अध्याय में किया है। वर्ष **2002** में सबसे ज्यादा शोध-प्रबंध प्राप्त हुए हैं और **2010** में सबसे कम शोध-प्रबंध सम्पन्न हुए हैं। वर्ष **2002** में **160** शोध-प्रबंध मिलते हैं तथा वर्ष **2010** में केवल **23** शोध-प्रबंध मिले हैं। वर्ष **1991** में **58,** वर्ष **1992** में **75,** वर्ष **1993** में **83,** वर्ष **1994** में **56,** वर्ष **1995** में **45,** वर्ष **1996** में **56,** वर्ष **1997** में **53,** वर्ष **1998** में **45,** वर्ष **1999** में **47,** वर्ष **2000** में **59,** वर्ष **2001** में **60,** वर्ष **2003** में **27,** वर्ष **2004** में **37,** वर्ष **2005** में **68,** वर्ष **2006** में **81,** वर्ष **2007** में **90,** वर्ष **2008** में **45,** वर्ष **2009** में **53** तथा वर्ष **2010** में **23** शोधार्थियों को शोध-उपाधि प्राप्त हुई है। सन् **2002** में शोध-कार्य अधिक होने के पीछे सम्भवतः यह कारण रहा होगा कि उस समय पीएच. डी. और यू. जी. सी. नेट को एक समान कर दिया गया था। **2009** के बाद महाविद्यालयों में प्राध्यापक के लिए यू. जी. सी. नेट को जरूरी कर दिया था। इसलिए शोधार्थियों का रूझान इस तरफ कम हो गया है। विविध वर्गों में कथा-साहित्य पर सबसे ज्यादा काम हुआ है और आदिकाल पर बहुत कम। कथा-साहित्य पर सबसे ज्यादा **434** शोध-ग्रंथ प्राप्त हुए हैं। कथा-साहित्य आधुनिक युग की एक लोकप्रिय विधा है। छात्रों का आकर्षण तथा साहित्यिक सामग्री प्रचुर मात्रा में मिलने के कारण इस पर शोध-कार्य अधिक हुआ है। आधुनिक काव्य पर भी **198** शोध-प्रबंध प्राप्त हुए हैं। मानव का यह स्वभाव है कि वह हमेशा जटिलता से सरलता की ओर अग्रसर होता है। आधुनिक काव्य पर शोध-कार्य करने की अनेक संभावनाए हैं। रोचक विधा होने के कारण, साहित्यिक सामग्री मिलने के कारण तथा शोधार्थियों की चि के कारण इस पर काफी शोध-कार्य हुआ है। प्रकीर्ण साहित्य (जिसे किसी वाद, युग या विधा की निश्चित सीमा में बांध नहीं सकते) पर **227** शोध-प्रबंध प्राप्त हुए हैं। इसमें विविधता होने के कारण शोधार्थियों को विषय के चयन में सुगमता रहती है। इसका क्षेत्र विस्तृत होने के कारण इस पर इतने शोध-प्रबंध मिले हैं।

भक्तिकालीन काव्य मध्यकालीन होते हुए भी आधुनिक युग की एक लोकप्रिय विधा है। यही कारण है कि इस पर **117** शोध-प्रबंध मिले हैं। अधिकतर मनुष्यों के हृदय में भक्ति सदैव विराजमान है। भक्तिकाल को हिन्दी साहित्य के स्वर्ण युग के रूप में जाना जाता है। यही कारण है कि शोधार्थियों की चि इसमें आज भी है। इस युग पर इतने शोध-प्रबंध मिलना इसका प्रमाण है।

नाटक एवं एकांकी साहित्य पर **102** शोध-प्रबंध प्राप्त हुए हैं। इस विधा के महत्त्व को देखते हुए यह संख्या कम है; यद्यपि हिन्दी नाटक कम लिखे जा रहे हैं। यह भी इसका एक बड़ा कारण हो सकता है। वर्तमान समय में, बड़ी संख्या में कालेजों एवं विश्वविद्यालयों में नाटक एवं एकांकी को स्वतंत्र विधा के रूप में नहीं पढ़ाया जाता है। दूसरा नाटक खेलने वाले थियेटर भी बहुत कम हैं और हिन्दी रंगमंच का दायरा सीमित है। फिर भी, इतने शोध-प्रबंध मिलना भी शोधार्थियों की चि दर्शाता है। संभव है भविष्य में इस पर काफी काम हो।

इतर हिन्दी गद्य (कथा-साहित्य एवं नाटक साहित्य से इतर) साहित्य पर **44** शोध-प्रबंध प्राप्त हुए हैं। मात्रा की दृष्टि से यह संख्या बहुत थोड़ी है। निबंध पर **18**, पत्रिकाओं पर **12**, आत्मकथा संबंधी **7**, यात्रा संबंधी **2**, साक्षात्कार संबंधी **2**, जीवनी संबंधी **1**, डायरी संबंधी **1** तथा संस्मरण संबंधी **1** शोध-प्रबंध मिला है। ये सभी आधुनिक युग की विधाएं हैं, तथापि इन पर बहुत कम शोध-कार्य हुआ है। कालेज एवं विश्वविद्यालयों में इनको भी अपवाद स्वरूप स्वतंत्र विधा के रूप में पढ़ाया जाता होगा। दूसरा इन पर विधाओं पर सहायक एवं संदर्भ साहित्य भी बहुत अल्प मिलता है। यही कारण है कि इन पर बहुत कम शोध-कार्य हुआ है। यह क्षेत्र शोधार्थियों से अधिक शोध-कार्य की अपेक्षा करता है।

भाषा-विज्ञान, लोक-साहित्य व समीक्षा संबंधी **69** शोध-प्रबंध मिले हैं। भाषा-विज्ञान संबंधी **15**, लोक-साहित्य संबंधी **40** तथा समीक्षा संबंधी **14** शोध-विषयों पर शोध का कार्य हुआ है। मात्रा की दृष्टि से यह भी अल्प कहा जाएगा। इसका कारण सहायक एवं संदर्भ सामग्री का न मिलना तथा परिणाम स्वरूप शोधार्थियों का इनमें चि न लेना हो सकता है। दूसरा लोक-साहित्य संबंधी शोध-कार्य में शोधार्थी को अपने विषय से संबंधित क्षेत्र में फील्ड-कार्य कार्य करने की

आवश्यकता होती है। जो साधनों, समय या अन्य कारणों की कमी के कारण सभी शोधार्थियों के लिए संभव नहीं होगा।

रीतिकालीन काव्य पर **28** शोध-प्रबंध प्राप्त हुए हैं। इसका कारण है कि रीति साहित्य को एक स्वतंत्र विधा के रूप में नहीं पढ़ाया जाता है। दूसरा रीति साहित्य अति श्रृंगारिकता व युद्ध से संबंधित होने के कारण समकालीन शोधार्थियों ने इसमें अपनी चि नहीं दिखाई है। इसकी अल्पता का यही कारण है।

आदिकाल पर केवल **2** शोध-प्रबंध मिलना बड़े आश्चर्य की बात है। इसके पीछे शोधार्थियों की चि संबंधी उदासीनता, शोध-सामग्री का कम मिलना तथा प्राप्त सामग्री का प्रमाणित सिद्ध ना होना हो सकता है।

कार्य एवं प्रस्तुति के स्वरूप तथा स्तर पर विचार करने से पता चलता है कि विवेच्य विश्वविद्यालयों में इस कालावधि में सम्पन्न शोध-प्रबंधों में क्या कमी है; क्या वे शोध-प्रविधि के अनुरूप हैं या नहीं? शोध-प्रबंधों के अध्ययन से पता चलता है कि कुछ कमियों को छोड़कर ये शोध-प्रबंध शोध-प्रविधि के अनुकूल ही हैं। कुछ शोध-प्रबंधों का मुखपृष्ठ व्यतिक्रम में है। कई शोध-प्रबंधों में मुखपृष्ठ पर शोधार्थी का नाम व वर्षोल्लेख नहीं किया गया है। अन्य में विषय-सूची में पृष्ठ संख्या नहीं दी गई है। अनेक शोध-प्रबंधों में पृष्ठांकन प्राक्कथन से प्रारम्भ कर लिया गया है। कुछ शोध-प्रबंधों में पाद-टिप्पणी अध्यायों के अंत में दी गई है। बहुतेरे शोध-प्रबंधों में व्याकरण संबंधी अशुद्धियां मिलती हैं। अन्य शोध-प्रबंधों का टंकण अस्पष्ट तथा धूमिल है। अनेक शोध-प्रबंधों की जिल्दबंदी सामान्य स्तर की है। इस तरह की उदाहरणों को छोड़कर ज्यादातर शोध-प्रबंध शोध-प्रविधि की गरिमा के अनुरूप हैं। शोध-निर्णय में शोध संबंधी जो मुख्य बिन्दु उभर कर आए है, उनका विवरण दिया गया है। यथा किन क्षेत्रों में अच्छा तथा अधिक शोध-कार्य हुआ है। इससे यह पता चलता है कि कुछ क्षेत्रों में बहुत शोध-कार्य हुआ है और कुछ में बहुत कम। अच्छी बात यह है कि शोध के क्षेत्र में नई उद्भावनाएं- यथा समाजशास्त्रीय, मनोवैज्ञानिक, प्रवासी-साहित्य, नारी-विमर्श, आदिवासी विमर्श तथा दलित-विमर्श उभर कर आई हैं।

चतुर्थ खंड में द्वादश अध्याय उपसंहार में शोध-विषय का सार, उपलब्धियों एवं सीमाओं तथा शोध-संकेतों का उल्लेख किया गया है। शोध-विषय का सार के अंतर्गत शोध-प्रबंध का संक्षिप्त ब्यौरा दिया गया है। उपलब्धियों एवं सीमाओं के अंतर्गत प्रस्तुत शोध-प्रबंध की उपलब्धियों और सीमाओं का वर्णन किया गया है। शोध-संकेत के अंतर्गत शोधार्थियों के लिए शोध के नए विषय सुझाए गए हैं।

पंचम खंड में परिशिष्ट में सहायक ग्रंथ-सूची दी गई है। इसे आगे पांच भागों में विभक्त किया गया है- हिन्दी संदर्भ ग्रंथ-सूची, अंग्रेजी संदर्भ ग्रंथ-सूची, शब्दकोश-सूची, इंटरनेट स्थल तथा अप्रकाशित शोध-प्रबंध की सूची।

12.2 उपलब्धियां एवं सीमाएं

उपलब्धियां

प्रत्येक कृति का कोई ना कोई उद्देश्य व उपलब्धि जरूर होती है।। यही उपलब्धि उसे सार्थक व प्रासंगिक बनाती है। प्रस्तुत शोध-प्रबंध का लक्ष्य 'वर्णनात्मक सर्वेक्षण एवं शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन के संदर्भ में पश्चिमोत्तरी भारत के विश्वविद्यालयों में सम्पन्न हिन्दी शोध-कार्य (सन् 1991 से 2010 तक)' का वर्णनात्मक सर्वेक्षण एवं शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन करना है। इस कालावधि में विवेच्य विश्वविद्यालयों से सम्भवतः प्राप्त शोध-प्रबंधों को विविध वर्गों में कालक्रमानुसार विभक्त करके, उनका वर्णनात्मक सर्वेक्षण व शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन किया गया है।

यद्यपि हिन्दी में शोध संदर्भ-ग्रंथों संबंधी कुछ काम हुआ है, तथापि हमारी जानकारी में शोध-प्रबंधों संबंधी वर्णनात्मक सर्वेक्षण एवं शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन संबंधी सिर्फ 1 शोध-प्रबंध मिलता है। यह शोध-प्रबंध इसी दिशा में दूसरा प्रयास है।

इस शोध-प्रबंध में विवेच्य विश्वविद्यालयों से प्राप्त शोध-प्रबंधों के सर्वेक्षण से पाठकों को तत्संबंधी जानकारी एक ही स्थान पर मिल जाएगी। किसी भी शोधार्थी के लिए सभी शोध-प्रबंधों

को देखना और सभी जगह जाकर देखना सम्भव नहीं है। यह एक बहुत ही श्रम साध्य कार्य है। इस शोध-प्रबंध से शोधार्थी को अपने विषय से संबंधित किए गए शोध-कार्य की विवरणात्मक जानकारी एक ही जगह मिल जाएगी।

प्राप्त शोध-प्रबंधों का वर्गानुसार, कालक्रमानुसार, आकारादिक्रम अनुसार तथा सार-संक्षेप दिया गया है ताकि शोधार्थियों का मन्तव्य पूर्ण हो सके। ये सभी सूचनाएं इस शोध-प्रबंध में उपलब्ध हैं।

हिन्दी शोध-क्षेत्र में आज शोध-कार्य तीव्र गति से हो रहा है। इससे ऐसे प्रबंधों की रचना भी हो रही है जिन्हें शोध-प्रविधि की दृष्टि से स्तरीय नहीं कहा जा सकता है। इस शोध-प्रबंध में यह भी बताया गया है कि किन शोध-प्रबंधों में शोध-प्रविधि का पूर्ण पालन हुआ है या नहीं तथा उनमें कौन-कौन सी न्यूनताएं हैं।

इसमें यह भी बताया गया है कि विभिन्न वर्गों संबंधी कितने शोध-प्रबंध सम्पन्न हुए हैं। नवीन संभावनाओं एवं क्षेत्रों के बारे में भी सहज ही परिचय प्राप्त हो जाता है, जो भावी शोधार्थियों के प्रस्थान बिन्दु का काम करता है। यही प्रस्तुत प्रबंध की सार्थकता है।

सीमाएं

प्रस्तुत शोध-प्रबंध में पश्चिमोत्तरी भारत के विश्वविद्यालयों में सम्पन्न हिन्दी पीएच. डी. शोध-कार्य (सन् **1991** से **2010** तक) का वर्णनात्मक सर्वेक्षण एवं शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन किया गया है। इसमें पश्चिमोत्तरी भारत के आठ विश्वविद्यालय लिए गए हैं। इन विश्वविद्यालयों में सम्पन्न पीएच. डी. शोध-कार्य को अपने शोध के विषय का आधार बनाया है। इसमें सन् **1991** से **2010** तक सम्पन्न पीएच. डी शोध-कार्य को लिया गया है। इसमें विवेच्य विश्वविद्यालयों में सम्पन्न एम. फिल. या एम. ए. का शोध-कार्य नहीं लिया गया है। इसमें डी. लिट् का शोध-कार्य भी नहीं लिया गया है। विवेच्य विश्वविद्यालयों के मुख्य पुस्तकालय व विभाग के पुस्तकालय से प्रस्तुत शोध-प्रबंधों संबंधी जानकारी प्राप्त की गई है। ये पूर्ण प्रयास किया गया है कि कोई भी शोध-प्रबंध रह न जाए। सम्भव है, संबंधित संस्थाओं की व्यवस्थागत त्रुटियों के कारण कुछ शोध-प्रबंध उल्लिखीत

होने से रह गए हों। यह हमारा सामान्य अनुभव है कि सार्वजनिक कार्यालय आदर्श रूप से कार्य नहीं कर पाते हैं। हो सकता है कि कुछ शोध-प्रबंधों की जानकारी या उनकी प्रति विभागीय पुस्तकालयों या मुख्य पुस्तकालयों में उपलब्ध न हो। इस संबंध में औपचारिक रूप से लिखित जानकारी प्राप्त करने के ई.मेल तथा पोस्ट मेल के प्रयासों में ज्यादा सफलता नहीं मिली। व्यक्तिगत रूप से जाकर निजी स्तर पर जानकारी को इकट्ठा किया गया है। फिर भी एक-दो विश्वविद्यालयों को छोड़कर प्राप्त सामग्री संतोषजनक कही जा सकती है। यही इस शोध-विषय की सीमा है।

12.3 शोध-संकेत

शोध-संकेत शोध-प्रबंध का अभिन्न अंग है। प्रायः शोध-प्रबंधों में इसकी कमी खलती है। शोध-संकेत भावी शोधार्थियों के लिए दिशा-निर्देश हेतु अत्यंत लाभकारी हैं। इससे उन्हें शोध-विषय चुनने में सहायता मिलती है। वर्णनात्मक सर्वेक्षण एवं शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन हिन्दी शोध-साहित्य में एक नवीन क्षेत्र है। ऐसे विषयों पर हिन्दी शोध साहित्य में काम नहीं हुआ है। अतः इस क्षेत्र में शोध की अपार सम्भावना है। प्रस्तुत शोध-योजना से निम्नलिखित नए शोध-विषय निकल कर सामने आते हैं-

1. पश्चिमोत्तरी भारत के विश्वविद्यालयों में सम्पन्न हिन्दी शोध-कार्य ः वर्णनात्मक सर्वेक्षण एवं शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन (सन् 2011 से 2020 तक)
2. हिन्दी शोध-प्रबंधों का वर्णनात्मक सर्वेक्षण ः उतरी भारत के परिप्रेक्ष्य में
3. हिन्दी शोध-प्रबंधों का शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन ः उतरी भारत के संदर्भ में
4. भारत के विश्वविद्यालयों में सम्पन्न हिन्दी शोध-कार्य ः वर्णनात्मक सर्वेक्षण एवं शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन (प्रमुख विश्वविद्यालयों के संदर्भ में)
5. पश्चिमोत्तरी भारत में सम्पन्न हिन्दी शोध-कार्य ः सूचीकरण एवं वर्गीकरण
6. हिन्दी शोध-प्रबंधों का वर्णनात्मक सर्वेक्षण ः पूर्वी भारत के परिप्रेक्ष्य में
7. हिन्दी शोध-प्रबंधों का शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन ः पूर्वी भारत के संदर्भ में

8. हिन्दी शोध-प्रबंधों का वर्णनात्मक सर्वेक्षण ः दक्षिण भारत के परिप्रेक्ष्य में

9. हिन्दी शोध-प्रबंधों का शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन ः दक्षिण भारत के संदर्भ में

10. हिन्दी शोध-प्रबंधों का वर्णनात्मक सर्वेक्षण ः पश्चिमी भारत के परिप्रेक्ष्य में

11. हिन्दी शोध-प्रबंधों का शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन ः पश्चिमी भारत के संदर्भ में

इस प्रकार प्रस्तुत शोध-प्रबंध में विवेच्य विश्वविद्यालयों में इस कालावधि में सम्पन्न शोध-कार्य को विविध वर्गों में विभक्त कर उनका वर्णनात्मक सर्वेक्षण एवं शोध-प्रक्रियात्मक मूल्यांकन किया गया है। आशा की जाती है कि आने वाले शोधार्थियों की सहायता करने के विषय में यह शोध-प्रबंध दूर तक जाएगा। यह भी उम्मीद है कि हमारे प्रयास से हिन्दी प्रकाशन-जगत् शोध विवरिणिकाएं छापने की ओर प्रेरित होगा। संभव है देश के अन्य विश्वविद्यालयों के हिन्दी-विभाग भी इस दिशा में आगे बढ़ें, जिससे हिन्दी शोध-प्रबंधों के संक्षिप्त विवरण का डाटा बेस बनाने में मदद मिलेगी।